निस्केयर
NISCAIR

दिसम्बर 2010

सम्पादक
प्रदीप शर्मा
सह सम्पादक
डा. बालक राम
प्रोडक्शन अधिकारी
कौशल किशोर
गणेश साहनी
कला अधिकारी
नीरू विजन
योगेश कुमार आनंद
फोटोग्राफी
एल. एन. बांगुर
कम्पोजिंग
संतोष खुराना, मीरा देवी
वरिष्ठ बिक्री एवं विज्ञापन अधिकारी
परवेज़ अली खान
वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

दिसम्बर 2010
विज्ञान प्रगति

रेल ही रेल

लाजवाब कार्यों का स्वरूप बड़ा ही विस्तृत होता है। ऐसे मात्र एक ही कार्य को आधार बनाकर अनेक अन्य महत्वपूर्ण कार्यों की आधारशिलाएं खड़ी की जा सकती हैं, तदोपरांत संबंधित क्रियान्वयन में आशातीत सफलता भी प्राप्त की जा सकती है। अब देखिए न, भारतीय रेल के 150 वर्ष पूर्ण होने पर जो रेलगाड़ी 'पहियों पर प्रदर्शनी' लेकर अगस्त 2002 से अप्रैल 2003 तक देशभर में चारों दिशाओं में घूमी थी वही 'पहियों पर विज्ञान प्रदर्शनी' लेकर एक उत्तम उद्देश्य के साथ आप सबके बीच भी घूमी। देश के विकास को ध्यान में रखते हुए विज्ञान प्रदर्शनियों को जन-जन तक पहुंचाने वाला यह एक महाकार्य था जिसके दूरगामी परिणाम होने की आशा सदा बनी रहेगी। रेलवे भारत जैसे बृहत एवं विकासशील देश में संचार एवं परिवहन का न केवल एक सुगम बल्कि सस्ता साधन है और इसने देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपके शहरों में रेलवे स्टेशन पर आपके समक्ष 12 डिब्बों वाली इस विज्ञान रेल में 18 विभागों/मंत्रालयों का चुनिंदा वैज्ञानिक खजाना (विशेषकर झांकियों के रूप में) उपलब्ध था जिसमें राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, दूर संचार विभाग, जल संसाधन मंत्रालय एवं केन्द्रीय जल आयोग, महासागर विकास, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, विज्ञान प्रसार, भारत मौसम विज्ञान विभाग, जैव प्रौद्योगिकी विभाग और सर्वे ऑफ इंडिया शामिल थे। इतने क्षेत्रों में इतनी महत्वपूर्ण जानकारी को एक ही बार में हासिल करना दरअसल एक सौभाग्य ही है। इस विज्ञान प्रदर्शनी का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने पर नवीन अनुभवों के साथ-साथ भविष्य के लिए कैरियर संबंधी योजनाओं को भी साकार किया गया। हमारा विश्वास है कि विज्ञान रेल विज्ञान प्रगति के प्रिय पाठकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुयी होगी और अगस्त 2004 में वापस दिल्ली पहुंचने से पूर्व इस विज्ञान रेल की मुलाकात विज्ञान प्रगति के बहुसंख्य पाठकों से भी हुयी होगी। विज्ञान रेल के इस कार्यक्रम के अंतर्गत आगंतुकों को प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रदर्शनियों, वर्किंग मॉडलों और स्लाइड/मल्टीमीडिया शो पर बल दिया गया था। साथ ही स्थानीय भाषा में प्रदर्शनी का सार प्रस्तुत करने के लिए विशेषज्ञ एवं स्वयं सेवक भी उपस्थित थे। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस विज्ञान रेल ने विज्ञान प्रगति के जिज्ञासु पाठकों का ज्ञान वर्धन अवश्य किया होगा और वे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय उपलब्धियों के बारे में एक ही बार में उचित जानकारी हासिल कर सके होंगे। विज्ञान रेल की सफलता को ध्यान में रखते हुए इसे बाद में 'विज्ञान मेल' के नाम से भी चलाया गया। कुछ वर्ष बाद यानी 30 नवम्बर 2007 को नई दिल्ली के सफदरजंग रेलवे स्टेशन पर हरी झंडी दिखाकर 'साइंस एक्सप्रेस' नामक ट्रेन का उद्घाटन करते हुए भारत के प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि 'साइंस एक्सप्रेस' द्वारा भारत के विद्यार्थियों को यह जानने का सुअवसर प्राप्त होगा कि किसी वैज्ञानिक के लिए नवीन समस्या का समाधान खोजने के समय, ऊर्जा और विचार मंथन समर्पित करने के लिए कौन से प्रेरक तत्व होते हैं और वे क्या महत्व रखते हैं। 'विज्ञान रेल' और 'साइंस एक्सप्रेस' कुछ ऐसे चुनिंदा उदहारण हैं जिन्होंने हमारा ध्यान रेलगाड़ियों की ओर विशेष रुप से आकर्षित किया। हमें इस बात का भान हुआ कि भिन्न-भिन्न रेलगाड़ियों के संदर्भ में अधिक से अधिक जानकारी अपने जिज्ञासु पाठकों तक पहुंचाई जाए। हमने पाया कि विदेशों में जिस प्रकार की रेलगाड़ियां चलती हैं उनमें से ज्यादातर हमारे देश में नहीं चलती हैं। उन विदेशी रेलगाड़ियों के बारे में हमने विज्ञान प्रगति के पूर्व अंकों में विभिन्न लेख प्रकाशित किये। लेकिन हमने पाया कि रेलगाड़ियों पर इतनी अधिक सूचनाएं उपलब्ध हैं कि हम 'रेलगाड़ियों पर विशेष' भी निकाल सकते हैं। कश्मीर घाटी में रेल की शुरुआत सभी के लिए हर्ष का विषय है। यही कारण है कि कश्मीर घाटी में रेल पर आमुख कथा प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। विज्ञान प्रगति के वर्ष 2010 के इस अंतिम अंक को 'रेलगाड़ियों पर विशेष के' रूप में निकालते समय हमने अनगिनत ऐसी सूचनाएं आपके लिए उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दिया है जो विदेशों से संबंध रखती हैं। अन्य अंकों की भांति विज्ञान प्रगति का यह अंक आपको अवश्य पसंद आएगा ऐसा हमारा विश्वास है!

मूल्य
एक अंक : 20.00 रुपये
एक वर्ष : 200.00 रुपये
दो वर्ष : 380.00 रुपये
तीन वर्ष : 540.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 25846301, 04-07/370; 25841769
प्रोडक्शन : 25847353, 25846301, 04-07/217, 284
विज्ञापन : 25845359, बिक्री : 25841647, 25846301, 04-07/335, 295 फैक्स : 25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http:/www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों और मतों के लिये राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी एस आई आर), डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।